कुल–गीत

विद्या के सिद्ध– पीठ जय महान हे !
जय–जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
भारत की भव्य भारती के स्वर तुम !
राष्ट्रभावना के सन्देश मुखर तुम !
बलिदानों के गुरुकुल महाप्राण हे !
जय –जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
हे अभिनव भारत के भाग्य–विधाता !
कोटि–कोटि जनता के मुक्ति–प्रदाता !
जन–गण को करते नेतृत्व–दान हे !
जय –जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
ऋषियों की वाणी के तुम व्याख्याता !
नूतन विद्याओं के अनुसन्धाता !
आत्मा के शिल्प संकल्पवान हे !
जय–जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
गांधी की गरिमा से ओत–प्रोत तुम !
शिवप्रसाद की विभूति, शक्ति–स्रोत तुम !
तुम में भगवान्दास मूर्तिमान हे !
जय– जय हे चिर नवीन,चिर पुराण हे !
कल्पना नरेन्द्रदेव की विराट तुम !
पुण्य भूमि भारत माँ के ललाट तुम !
दे रहे समन्वय का दिव्य ज्ञान हे !
जय–जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
इस विद्या–मन्दिर की अमर भारती !
राष्ट्र देवता की कर रही आरती !
ज्योतित हम दीपवर्तिका–समान हे !
जय –जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
सत्य –अहिंसा के हे दृढ़ व्रतधारी !
युग–युग तक अटल रहे मूर्ति तुम्हारी !
युग–युग तक विश्व करे कीर्तिमान हे !
जय–जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !
नभ में लहराये वह पुण्य–पताका !
जिस पर है चित्र टँका भारत माँ का !
शंभु के त्रिशूल शलाका–प्रमाण हे !
जय –जय हे चिर नवीन, चिर पुराण हे !